CHHATRASHAKTI

स्वर्ण जयंती वर्ष अधिवेशन विशेषांक

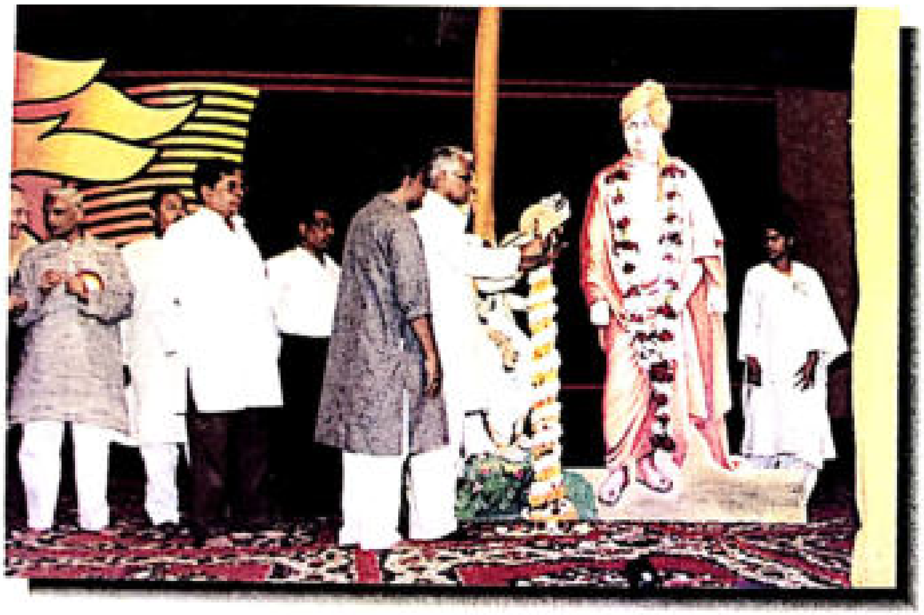

Hon'ble Defence Minister
Shri. George Fernandes
Inaugreating Golden Jubilee
National Conference

Shri Nana Patekar Felicitating ➢
Shri Anil Mehta, Winer of
Kelkar Yvua Purskar

➢ Hon'ble Home Minister
Shri. L. K. Advani at 'Swarna Path',
a pictorial depiction of ABVP
activity.

स्वर्ण जयंती वर्ष
अधिवेशन विशेषांक

Inside

- लखनऊ में उच्च शिक्षा पर संगोष्ठी 4
- शैक्षिक परिदृश्य 6
- A WARPED INDIAN MEDIA! 9
- NATIONAL CHARTER OF STUDENTS 11
- अनुशासन की दृष्टी से विद्यार्थी परिषद आदर्श है - मा. रज्जूभैया 13
- ABVP SEEKS A LARGER GLOBAL ROLE - Shri Atul Kothari 26

Editor Desk

V. Murleedharan
Sharadmani Marathe
V. Sangeetha
Ashish Chavan
Shreerang Kulkarni

EDITORIAL

With the successful organisation of the Golden Jubilee Year National Conference, ABVP has completed a major milestone of it's life time. Those who could not attend have missed a wonderful opportunity of experiencing a glorious moment in the history ABVP. Student Power for social tranformation was the theme of the Conference and in the years to come one would undoubtedly see a greater role played by the student in the process of social change. The National Charter of Students adopted at the Conference underlines the student's commitment to social issues and the responsibility he has accepted as his own in resolving the same.

One such issue being debated heatedly is of conversions by Christian missionaries. The happenings in the Dang district in Gujarat followed by the Staines burning in Orissa have brought this problem to the forefront of public debate. What has always been a very low-key but persistent area of missionary activity has now been exposed to closer scrutiny. The media has as usual been quick to blame it all on the so-called Hindu fundamentalists, avoiding any genuine enquiry into the actual doings of Christian Missionaries or even into the actual events. Given the frenzy of accusations and counter accusations we would urge activists to not form any hasty opinions until a proper survey to indentify various factors leading to the two events has been undertaken. This is in no way a defense of the heinous crime committed in Orissa, which needs to be strongly condemned and the guilty brought to book forthwith. However the flip side of the coin also needs to be looked into.

What is more pertinent for student activists is the urgent necessity to take developmental activity to remote vanavasi areas. Such activity, however is useful only if the beliefs, customs and traditions of vanavasi life are properly understood, respected and preserved.

Let us resolve to undertake such activities during the summer vacations giving ourselves the chance of first hand interaction with vanavasi life. Till then the chhatrashakti team wishes you all very best for your forthcoming exams.

लखनऊ में उच्च शिक्षा पर संगोष्ठी

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के स्वर्ण जयंती वर्ष पर देश के विभिन्न शहरों में चार राष्ट्रीय शैक्षिक संगोष्ठियों का आयोजन होने वाला है। इसी शृंखला की एक संगोष्ठी दि. 2 और 3 नवम्बर 98 को लखनऊ में संपन्न हुई। देश के विभिन्न राज्यों तथा नेपाल से कुल 92 प्रतिनिधियो ने इस संगोष्ठी में भाग लिया। इस संगोष्ठी में प्रस्तुतीकरण हेतु 35 प्रपत्र प्राप्त हुये थे जिसमें से 17 प्रपत्रों पर पठन और व्यापक चर्चा हुई। दि. 2 नवंबर को लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में इस संगोष्ठी का उद्‌घाटन समारोह सम्पन्न हुआ जिसकी अध्यक्षता अ.भा.वि.प. के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रा. दिनेशानंद गोस्वामी ने की। गोविन्द बल्लभ पन्त विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की उच्च शिक्षा पत्रिका के सम्पादक प्रो. आनंद सरुप मुख्य अतिथी थे। प्रो. आनंद सरुप ने अपने भाषण में कहा, "हमारे देश में आर्थिक विकास, सामाजिक परिवर्तन और शिक्षा यह तीनों क्षेत्र एक दूसरे में इतने गुंथे है कि समग्र व्यवस्था में परिवर्तन किए बगैर समस्याओं से निपटना सम्भव नहीं।" उन्होंने आगे कहा कि वे विद्यार्थी परिषद के सभी विचारों से सहमत नहीं लेकिन अब वक्त आ गया है जब विचारधाराओं की सीमाओं को तोड़कर शिक्षाविद्, शिक्षक और विद्यार्थी आर्थिक व सामाजिक परिवर्तन में सरकार की भूमिका को दरकिनार कर अपनी भूमिका निश्चित करें।

इस अवसर पर विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रा. दिनेशानंद गोस्वामी ने कहा "तकनीकि शिक्षा का व्यवसायीकरण हो गया है, प्राइवेट संस्थान इंजिनियरिंग और प्रबंधन की पढ़ाई के नाम पर मोटी फीस वसूल रहे हैं इसलिए जरुरी हो गया है की अब उच्च शिक्षा की फीस पर कानून पारित किया जाए। उन्होंने औद्योगिक विकास बैंक की तर्ज पर शिक्षा विकास बैंक की भी बात कही और यह भी कहा की कुछ राज्य संविधान की धारा 29 व 30 का नाजायज फायदा उठा रहे है इसलिये उन धाराओं को संशोधित किया जाना चाहिये।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा आयोजित इस संगोष्ठी में शिक्षा, आर्थिक विकास, सामाजिक परिवर्तन, रोजगार के अवसर, एवं मानव शक्ति नियोजन से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर विचार मंथन हुआ। उसी विचार मंथन से उभरे हुए कुछ प्रमुख मुद्दे हैं:

- शिक्षा विकास बैंक की स्थापना राष्ट्रीय स्तर पर की जाये जिसके द्वारा शिक्षण संस्थानों की स्थापना तथा उच्च शिक्षा की पढ़ाई के लिए आसान शर्तों पर ऋण उपलब्ध हो सके।
- पिछड़े क्षेत्रों में आर्थिक विकास की शिक्षा की वृद्धि के लिए वित्तीय कठिनाईयों को दूर करने के लिए केन्द्र सरकार को प्रत्यक्ष सहभागिता करनी चाहिए। इसके लिए केन्द्र सरकार को सकल घरेलु उत्पादन का कम से कम 6% शिक्षा पर व्यय निर्धारित करना चाहिए।
- प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य बनाते हुए प्रत्येक बच्चे का नामांकन अवश्य हो ऐसी योजना बने।
- प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च एवं तकनीकी शिक्षा के व्यापारीकरण एवं उनमें बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का प्रवेश तुरन्त वर्जित किया जाये।
- नैतिक शिक्षा का अध्यापन अनिवार्य किया जाये। जिसमें भारतीय जीवन मूल्यों को प्रतिस्थापित करने के लिए राष्ट्र के प्रमुख महापुरुषों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्यापन हो ।
- स्वायत्तशासी राष्ट्रीय विद्यापीठ की स्थापना हो जो प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च एवं प्रविधिक शिक्षा में एकात्म शिक्षा की व्यवस्था करें।
- शिक्षा पर प्रभावशाली व्यक्तियों, पुंजीपतियों, राजनेताओं, नोकरशाहों का अधि... समाप्त कर इसे सामाजिक कार्य समझ कर समाज के लिए समाजद्वारा चलाया जाये।
- शिक्षण संस्थानों को रोजगार सृजन करने वाली कार्यशाला न मानकर इसे मानव निर्माणशाला स्वीकार करना चाहिए।
- 10 + 2 तक शिक्षा के बाद व्यावसायिक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा तथा प्रशासनिक सेवाओं, कार्यालय कर्मियों आदि के प्रशिक्षण की व्यवस्था हो ताकि उच्च शिक्षा में अनावश्यक भीड़ समाप्त हो।

कुल पांच सत्रों में प्रस्तुत प्रपत्रो का संकलन एवं उस पर विस्तृत चर्चा एक अलग सत्र में भी की गयी। उस सत्र की अध्यक्षता गढ़वाल विश्वविद्यालय के उप कुलपति प्रो. व्ही. एस. सोमवाल ने की। संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष ... रामस्नेही गुप्त ने की तथा इसके मुख्य अतिथि अवध विश्वविद्यालय के कुलपति डॉं. गिरीश सक्सेना थे।

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में आये प्रपत्रों तथा चर्चा के बाद निकले निष्कर्षों की रिपोर्ट बनाकर राज्य सरकार तथा केंद्र सरकार के पास भेजी जायेगी और आग्रह किया जायेगा कि शिक्षा से संबंधित योजनायें बनाते समय इस रिपोर्ट को ध्यान रखा जाये और संस्तुतियों को शामिल किया जाये।

◆ ◆ ◆

स्वर्ण जयंती वर्ष राष्ट्रीय अधिवेशन का मुंबई में शानदार उद्घाटन

उद्घाटन कार्यक्रम में भाषण करते हुए रक्षा मंत्री श्री जॉर्ज फर्नांडिज

अ।खिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का स्वर्ण जयन्ती वर्ष राष्ट्रीय अधिवेशन दि. .26,27 दिसम्बर 1998 को मुंबई मे सम्पन्न हुआ जिसका उद्घाटन भारत के रक्षा मंत्री श्री जॉर्ज फर्नांडीज ने किया । अधिवेशनों की श्रृंखला में यह 44 वाँ अधिवेशन था जो सभी दृष्टियों से अभी तक का सबसे बड़ा आयोजन सिध्द हुआ ।

उद्घाटन के अपने ओजस्वी भाषण में श्री फर्नांडीज ने कहा कि स्वदेशी का केवल एक ही अर्थ है - 'राष्ट्र-भक्ति'। वलम्बन, स्वाभिमान और स्वभाषा स्वयं उसके साथ जुड़ जाता है। हम सब उसके लिये समर्पित है । वर्तमान की कठिनाइयों का उल्लेख करते हुए उन्होनें कहा कि 1977 में जब मै उद्योग मंत्री बना - एक महीने के अंदर कोकाकोला सहित अनेकों बहुराष्ट्रीय कंपनियों को निकाल बाहर किया था। 6 लाख की पूँजी लेकर हिंदुस्थान में आई कंपनी 19 वर्षों में 25 करोड़ का मुनाफा लेकर अमेरिका गई। आज हिंदुस्थान का समुचा शीतल पेय बाजार तीन कंपनियों के हाथों में है लेकिन आज उनको निकाल नहीं सकते। उसके अनेक खतरनाक परिणाम हो सकते है । क्योंकि नरसिंह राव और उसके बाद की सरकारों ने अपरिवर्तनीय बदलावों को इस देश के माथे पर थोप दिया है ।

लोकनायक जयप्रकाश का स्मरण करते हुए उन्होंने कहा कि वे कहते थे - 'मै अंधेरे में था, गुजरात के छात्रों ने मुझे रोशनी दिखाई।' अभाविप की दस लाख सदस्यता को उन्होंने एक बड़ी शक्ति बताते हुए कहा स्वदेशी के अभियान को निरंतर आगे बढ़ाने के साथ-साथ देश के समक्ष उपस्थित चुनौतियों से लड़ने का संकल्प करना चाहिये । छात्र-शक्ति को लोक शक्ति के निर्माण में अपनी भूमिका निभानी चाहिये।

डेनठार विश्वविद्यालय, अमेरिका में विधि प्राध्यापक तथा संविधान विशेषज्ञ प्रा वेद प्रकाश नंदा, जो अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष भी है, ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की । अपने उद्बोधन में उन्होंने परिषद के विकास पर संतोष व्यक्त करते हुए निकट भविष्य में आने वाले वैश्विक परिवर्तनों में अपने योगदान हेतु तैयार रहने की आवश्यकता की ओर संकेत किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री दिनेशानन्द गोस्वामी ने परिषद के संगठनात्मक विकास तथा वैचारिक वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालते हुए प्रास्ताविक कथन किया । भारतरत्न डा.ए.पी.जे अब्दुल कलाम, अधिवेशन के उद्घाटन हेतु जिनका आना पूर्व निश्चित था, विशेष कारणों से नहीं आ सके। छात्र समुदाय हेतु उन्होनें अपना प्रेरणादायी संदेश प्रेषित किया जिसे पूर्व महामंत्री श्री महेन्द्र कुमार ने प्रतिनिधियों के समक्ष पढ़ा ।

●●●

शैक्षिक परिदृश्य

(विद्यार्थी परिषद के स्वर्ण जयंती वर्ष अधिवेशन में सर्व सम्मति से पारित प्रस्ताव)

अभी हाल ही में शिक्षा मंत्रियों के सम्मेलन में सरस्वती वन्दना पर जो अशोभनीय विवाद खडा किया गया वह दो कारणों से ध्यान देने योग्य है -

1) यह दूषित मानसिकता से ग्रसित राजनीतिज्ञ एवं तथाकथित बुध्दिजीवियों के सेक्युलरिज्म के नाम पर किये जा रहे दुराग्रहपूर्ण पाखंड को उजागर करता है; एवं

2) यह इस बात को भी प्रकट करता है कि किस प्रकार से सारहीन एवं अव्यवहारिक मुद्दों को उठा कर शिक्षा के मूल उद्देश्यों को किनारे किया जा रहा है ।

अनादि काल से इस देश में सरस्वती को ज्ञान की देवी माना गया है । प्रत्येक शुभ कार्य पर देवी सरस्वती का आव्हान करना हमारे सामाजिक जीवन में अपृथक्नीय प्रथा बन कर गुंथ गया है । वर्णमाला एवं अक्षरज्ञान के प्रारंभ से लेकर भारत में प्रत्येक शैक्षिक कार्य का प्रारंभ माँ सरस्वती के आव्हान से ही होता है। सारे देश में हजारों विद्यालयों में नित्य सरस्वती वन्दना निर्बाध रुप से की जाती रही है। ऐसे में शिक्षा विभाग की देखरेख करनेवाले राज्यों के मंत्रियों द्वारा मन में श्रध्दा एवं पावित्र्य की भावना जगाने वाली इस परंपरा का विरोध उनकी विकृत मानसिकता का परिचायक है । ये घटनाएँ प्रकट करती हैं कि उन्होंने अपने आप को देश की संस्कृति एवं मूल्यों से कैसे विलग कर लिया है। ये इस बात को भी उजागर करती हैं कि उनका उद्देश्य स्वार्थपूर्ण वोट की राजनीति के लिए मुख्य मुद्दों को किनारे कर गलियारों में शोर मचाना था। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि वन्देमातरम् का गायन या भारतमाता के प्रति श्रध्दापूर्वक नमन किसी की इच्छा पर निर्भर न करे एवं इस पर कोई विवाद खड़ा न हो । शिक्षा के क्षेत्र में प्रकट हुई उद्देश्यहीनता एवं भटकाव नेताओं के इसी विलगाव का परिणाम है। इसी मानसिकता के कारण मिथ्या एवं विकृत इतिहास का लेखन हुआ है। अ.भा.वि.प. माँग करती है कि इतिहास की विकृतियों को दूर करने एवं राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में सही इतिहास के लेखन के लिए उचित कदम उठाने चाहिए । अ.भा.वि.प. यह भी माँग करती है कि इंडियन कौंसिल फॉर हिस्टोरिकल रिसर्च (आई.सी.एच.आर.) में हुए व्यापक भ्रष्टाचार एवं मार्क्सवादी इतिहासकारों द्वारा जानबूझ कर की गई विकृतियों की जाँच की जानी चाहिए ।

संविधान के अनुच्छेद 30 के प्रावधानों का इस प्रकार प्रयोग किया जा रहा है कि अल्पसंख्यक संस्थाएँ अपने आपमें स्वंतत्र संस्था बन गये है जो अपने ही विधान से चलती हैं। शिक्षा क्षेत्र में दूषित मानसिकता का यह एक और उदाहरण है। अ.भा.वि.प. माँग करती है कि ऐसे कदम उठाये जाये जिससे इस अनुच्छेद को पक्षपातपूर्ण विभेद का हथियार बनने से रोका जा सके ।

एक तरफ जहाँ तथाकथित सेक्युलर निर्विवादित विषयों पर भी विवाद खड़ा कर रहे हैं वहीं दूसरी तरफ देश में शिक्षा के क्षेत्र में चारो ओर निराशा है। शिक्षा के हर क्षेत्र में समस्याएँ इतनी व्यापक हैं कि

(पृष्ठ क्र. 20 पर)

Sea of disciplined student power swamps Mumbai

One of the main attraction of the 44th National Conference in Mumbai was the grand Shobhayatra which culminated in a mammoth Public function at the historic 'Shivatheertha' ground (Shivaji Park). On the forenoon of 26th December, Yeshwantrao Kelkar Nagar buzzed with activity as the delegates took their positions for the procession. The delegates from Tamil Nadu, decked in their traditional dress, holding the 'Dhwaj' aloft, led the procession. They were followed by delegates of other states holding placards, banners and raising patriotic slogans. A cavalcade of cars, motorcycles and Chhatrashakti 'Raths' followed. As the procession wound along the highways and serpentine roads of the city, bystanders and local activists cheered them along the way. The procession route of 6.5 kms. was decorated with wall paintings, posters and banners, welcoming the delegates to Mumbai. Huge processions are not a new sight in Mumbai but the uniqueness of this procession was that despite a total of 12,563 delegates on the streets, perfect discipline was maintained and no untoward incident took place.

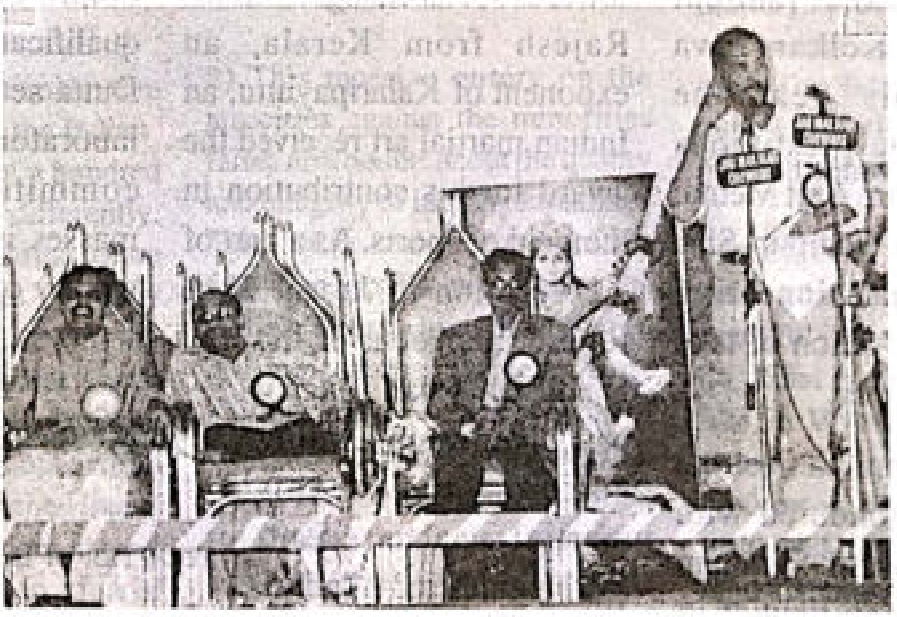

Shri Nana Patekar addressing the public meeting of the conference

Shri Nana Patekar, eminent Cine-Star was the Chief Guest at the public function. He enthralled the audience as he addressed them in his inimitable style. The newly elected All-India General Secretary Shri Atulbhai kothari and State Secretary Shri Narendra Pawar

Shri Nana Patekar felicitating Ms. Mamata at Shivaji Park

spoke on the occasion. Shri Nana Patekar presented the Swarna Jayanti Samman awards and the annual Yeshwantrao Kelkar Yuva Puraskar. This year the recipient of the prestigious Puraskar was Shri Anil Mehta, a lecturer from Udaipur. Shri Mehta has done pioneering work for conservation of lake systems in Udaipur.

Five persons from all over the country were honoured with the Swarna Jayanti Samman for outstanding contribution in their respective fields. Shri. Girish Bapat received the award on behalf of the Pune-based educational institution Jnana Prabodhini. Founded in 1962, the Prabodhini has grown into a movement for motivating intelligence towards social change. Shri M. Rajesh from Kerala, an exponent of Kalaripayuttu, an Indian martial art received the award for his contribution in the field of sports. As a part of a delegation to Japan, Shri. Rajesh, a student of the Hindustan Kalari Sangam has given scintillating performances of this martial art. Smt. Roshamma from Andhra Pradesh received the prize for her relentless war against liquor addiction in Nellore destrict. Her selfless crusade for de-addiction has proven to be a boon for countless farmers in Andhra Pradesh. Smt. S. R. Mamatha, a social worker from Karnataka was awarded the Swarna Jayanti Samman for her work amongst tribal women. A full-time worker of Vivekananda Youth movement, Smt. Mamatha has embraced this work as her life-mission, Dr. B. K. Dutta, scientist from Vivekananda Institute of Biotechnology in West Bengal was honoured for his enterprising work in organic farming to improve the lot of the Indian farmers. After obtaining his post doctoral qualification from abroad, Mr. Dutta set up his independent laboratory for research. His commitment to the rural masses is a lofty role model worthy of emulation.

Conference at a Glance

Total No. of Delegates	12563
District represented	472
Places represenyed	1491
Total No. of Prabhandak	1163
States (ABVP) represented	25

A warped Indian media!

While there is no doubt that the ghastly murder of Graham Stewart Staines, the Australian missionary, and his two innocent sons, should be universally condemned and that the culprits should be severely punished.

The massive outcry it has evoked in the Indian Press raises several important questions, which can only be answered by a Westerner, as any Indian who would dare utter the following statements would immediately be identified with the Sangh parivar:

1) Is the life of a white man more important and dear to the Indian media than the lives of a hundred Indians? Or to put it differently: Is the life of a Christian more sacred than the lives of many Hindus? It would seem so. Because we all remember not so long ago, whether in Punjab or in Kashmir, how militants would stop buses and kill all the Hindus men, women and children. It even happened recently, when a few of the last courageous Hindus to dare remain in Kashmir were savagely slaughtered in a village, as were the labourers in Himachal Pradesh. Yet, very few voices were raised in the Indian Press condemning it; at least there never was such an outrage as provoked by the murder of Staines. When Hindus are killed in pogroms in Pakistan or Bangladesh, we never witness in the Indian media the like of the tear jerking, posthumous interview of Staines in Star News.

2) This massive outcry on the atrocities against the minorities raises also doubts about the quality and integrity of Indian journalism. Take for instance the rape of the four nuns in Jhabua. Today the Indian Press (and the foreign correspondents witness Tony Cliftons piece in the last issue of Newsweek) are sitll reporting that it was a religious rape. Yet I went to Jhabua and met the four adorable nuns, who themselves admitted, along with their bishop George Anatil, that it had nothing to do with religion. It was the doing of a gang of Bhil tribals, known to perpetrate this kind of hateful acts on their own women. Yet today, the Indian Press, the Christian hierarchy and the politicians continue to include the Jhabua rape in the list of the atrocities against the Christians.

In Wyanad in northern Kerala, it was reported that a priest and four women were beaten up and a Bible was stolen by fanatical Hindus. An IR was lodged, the communists took out processions all over Kerala to protest against the atrocities and the Press went gaga. Yet as an intrepid reporter from the Calicut office of The Indian Express found out, nobody was beaten up and the Bible was safe. Too late: the damage was done and it still is being made use of by the enemies of India.

Finally, even if Dara Singh does belong to the Bajrang Dal, it is doubtful if the 100 others accused do. What is more probable is that like in Wyanad, it is a case of converted tribals versus non-converted tribals, of pent-up jealousies, of old village feuds and land disputes.

It is also an outcome of what it should be said are the aggressive methods of the Pentecost and seventh Adventists missionaries, known for their muscular ways of converting.

Why does the Indian Press always reflect a Westernised point of view?

Why does Indias intellectual elite, the majority of which happens to be Hindu, always come down so hard on their own culture, their own religion, their own brothers and sisters? Is it because of an eternal feeling of inferiority, which itself is a legacy of British colonisation? Is it because they consider Hindus to be inferior beings remember the words of Claudius Bucchanan, a chaplain attached to the East India Company: ...Neither truth, nor honesty, honour, gratitude, nor charity, is to be found in the breast of a Hindoo! Is it because the Indian Press is still deeply influenced by Marxist and communist thoughts like it is in Kerala, where the communists have shamelessly and dangerously exploited the Christians issue for their own selfish purpose?

Whatever it is, the harm is done. Because, even though it is not the truth which has been reported from Jhabua, from Wyanad or from the Keonjhar district in Orissa, it has been passed off as the truth and it has been believed to be so by the masses. And the result is that it has split India a little more along religious and castes lines. And finally, Christianity has always striven on martyrdom, on being persecuted. Before the murder of Staines, the Christian story was slowly dying; the culprits of the Jhabua rape would have been condemned and the Wyanad fraud exposed. In one stroke the burning of Staines has insured that it does not die for a long time. Was the joy of martyrdom for the cause hefought for 34 years his last thought before dying?

(The author is the correspondent in South Asia for Le Figaro, France's largest circulation newspaper.)

Courtesy: Hindusthan Times

With Best Compliments From

MOJ PIPE FOUNDRY

NATIONAL CHARTER OF STUDENTS

(Given below is the text of the National Charters of Students adopted unanimously at the Golden Jubilee Year National Conference at Mumbai)

We, the students, assembled here in Mumbai on the occasion of the Golden Jubilee Year Conference of Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad on this 27th day of December 1998

- Reaffirming our unflinching faith that
- unity and integrity of Bharat are sacred and non-negotiable
- noble endeavour of national reconstruction is our life mission
- the goal of national reconstruction can be attained only by effective participation of the people,

■ Restating our firm conviction that

- our millennia-old cultural heritage and civilisation continue to be our basic source of inspiration for all endeavours
- the Bharatiya philosophy with its unique definition of the relationship of the individual, the society, creation and the creator and its distinct concept of human happiness provides the abiding basis for meeting the multi-pronged challenges facing the world community
- any plan for national reconstruction is to be based on an unswerving faith in the principles and practice of Dharma which is the soul and strength of our age-old civilisation
- awakening the spirit of national consciousness and self-pride among the people is the pre-condition for national development and social transformation
- the students as citizens of today rather than of tomorrow have a vital role to play as agents of social change and national development
- the multifaceted activism by the student as social critic, social deterrent and social watch-dog, is the means towards this end, and student can best shoulder this responsibility by remaining above the confines of partisan politics
- our message could be carried across the people when we practice what we preach and

■ Believing that

- Bharat, being the most ancient nation of the world, with its vision and wisdom, has to accomplish her destined global mission of Vishwa Kalyan, which will ensure the everlasting happiness and fulfilment of human life
- and for this purpose, Bharat has to be transformed into a strong, prosperous, modern, egalitarian and confident nation occupying her rightful place in the global community solemnly adopt this **NATIONAL CHARTER OF STUDENTS.**

In our efforts to realise the above goals and vision and in pursuance of our convictions, we, as responsible citizens, consciously commit ourselves to the following:

1. Strengthening national identity by integrating seemingly diverse social and regional differences and aspirations on the basis of our assertion that there is an underlying unity in the

(contd. from page no.11)

apparent diversity which is why we are one nation, one people and have one culture, and hence endeavouring to ensure that these foundations of national unity are preserved and strength ened by our words and deeds.

2. Eradicating social evils like casteism, untouchability and dowry, and establishing a social order ensuring social equality and social justice.
3. Ensuring gender equality and respectable status to women and enabling them to play their complementary role as equal participants in all spheres of social life without hindrance or harassment of any kind and also strengthening the family institution which is the basic unit of society and the cradle of social virtues.
4. Restoring to the universities their rightful place as centres of intellectual and visionary leadership and towards this end, developing a healthy campus culture whereby a vibrant campus life-with the academic community playing a socially relevant, multidimensional and more participatory role - is created.
5. Making continuous efforts in all possible ways for educational change - in philosophy, policy, programme and in administration, on the basis of Bharatiya values and vision.
6. Strengthening the democratic systems and making them more meaning ful by instilling faith in democratic norms and values and also by initiating a debate so as to introduce required reforms.
7. Strengthening the concept of individual contribution in national prosperity by promoting a work culture characterised by entrepreneurship, honesty, transparency, hardwork and commitment.
8. Involving students in the efforts for promoting literacy among people to eradicate the curse of illiteracy.
9. Developing and acquiring the most sophisticated technology with a human face, for the purpose of national development so that, as a nation, we will be in the forefront of technological advancement.
10. Checkmating the spread of consumerist culture that is posing a serious threat to ecological balance and evolving a model of development with natural resources and cultural ethos.
11. Pursuing, practising and promoting the concept of Swadeshi in our economic, cultural and educational spheres so as to redeem our country,on one side, from the foreign onslaughts that hinder national progress and, on the other from poverty, starvation, unemployment and exploitation.
12. Involving students in various development oriented activities and experiments at all levels and also promoting environment protection and promotion activity.
13. Initiating a strong campaign for cleansing the public life of our country from corruption, duplicity, chicanery, sycophancy and criminality so as to establish honesty of purpose, probity and transparency in public life.
14. Fighting the anti-social and anti-national elements and forces which are out to destabilise our nation and harm the national interests and do not desist from spreading and adopting violence for furthering their cause.

We proclaim that these commitments made by us today shall direct and determine our actions at personal, social and organizational levels.

We make the declaration that all our policies, plans, programmes and actions will be guided by the above vision, conviction and commitments, through which we will be able to play our meaningful and contributory role for the noble task of national reconstruction.

VANDE MATARAM

'अनुशासन की दृष्टी से विद्यार्थी परिषद आदर्श है'

- मा. रज्जूभैया

इस स्वर्ण में जयंती के अवसर पर आप सबका स्वाभाविक स्वागत है, अभिनंदन है। आज मै भी यहां आप सबके बीच में आ सका। आज कल तो गाडीयाँ भी समय पर नहीं आती। इसको मै अपना सौभाग्य समझता [illegible] की अधिकांश बंधुओं का पूर्वपरिचय होने के कारण उन सबसे मिलने का अवसर मिला। सन 1948 में, विधीवत 1949 विद्यार्थी परिषद का पंजीकरण हुआ हो पर 1948 के अंदर ही जब लोग जेल में थे, देश साक्षर हो चुका था तब हजारो लोगों ने कोने कोने में जाकर साक्षरता के लिए Adult Literacy के लिए काम किया। मुझे स्मरण है की प्रयाग विश्वविद्यालय से [illegible]00 ऐसे छात्र थे जो साक्षरता का काम करने के लिए ग्रामों में गये। शायद अगर उस समय इस Movemen को बढाया जाता कुल 5000 लोग निकले थे, 10,000 हो जाते तो शायद हम इस देश की निरक्षरता को मिटा सकते। परंतु देश में नेहरु जी के नेतृत्व में समाजवाद आया उन्होंनें कहा की अब काम हम करेंगे, सरकार करेगी तब समाज में एक initiative था देश के प्रति वह वापस चला गया। अगले 2-3 वर्षो तक विभिन्न काम विद्यार्थी परिषद करती रही क्योंकि मै भी उस समय विश्वविद्यालय में अध्यापक था, इसलिए विद्यार्थी परिषद के इस बड़े शैक्षिक परिवार से जिसमें विद्यार्थी है, अध्यापक है, अभिभावक है जिसमें मै भी सम्मिलित रहा हूं इसलिए प्रारंभ के जो आपके अध्यक्ष है, मंत्री है उनसे मेरा व्यक्तिगत परिचय रहा है। विद्यार्थी परिषद ने अनेक ऐसे काम किए है जिनसे आप परिचित होने चाहिए परंतु 50 सालों का इतिहास हुआ आजकल तो 5-10 सालों की बातें लोग भूल जाते है, जो सच इस देश के लिये आश्चर्यजनक है। विद्यार्थी परिषद ने राष्ट्रीय भावना लोगों में भरने के लिए काम किया और हम सत्य जानते है की कश्मिर में तिरंगा लहराने के हेतु हजारों विद्यार्थी जम्मू, उधमपुर तक जा पहुचें और आगे जाने के लिए प्रस्तुत थे। ये वो सरकार का कहना था कि वे आगे नहीं जा सकते। जिस समय infiltration की समस्या आगे आयी, बांगलादेश से बहुत से लोग यहा आकर जम गये तब All Assam Students Union सत्याग्रह करते थक गयी तब विद्यार्थी परिषद के हजारों कार्यकर्ताओं ने आगे आकर वहा प्रेरणा दी, शक्ति प्रदान की। और उसको एक अखिल भारतीय रूप दिया। अनेक कार्यक्रम है जो विद्यार्थी परिषद ने किये है और मै समझता हूं की इस स्वर्ण जयंती के अवसर पर उन सब क्रियाकल्पों का स्मरण करना अच्छा रहेगा। देश में एकता की भावना आनी चाहिए। लोग तो सारे देश में कभी घुम ही नहीं पाते है इसलिए Experience in Inter-State

अधिवेशन में प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए पू. रज्जूभैया साथमें मंच पर महामंत्री श्री अतुल कोठारी एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री दिनेशानंद गोस्वामी

glimpses of the co

Shri Dineshanand Goswami
National President

Shri Nana Patekar
Addresing at Shivtirth

Grand

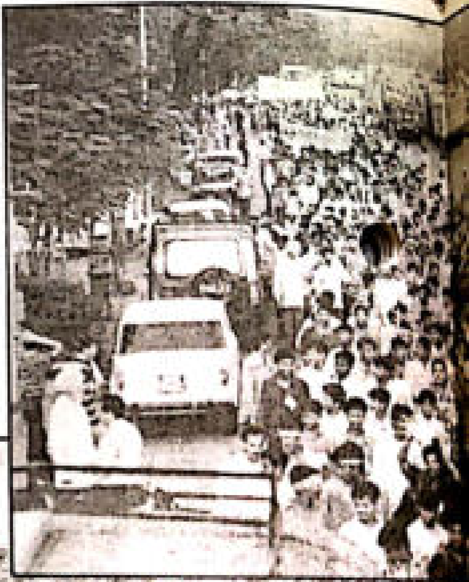

Sea of disciplined student

conference......

Shobhayatra

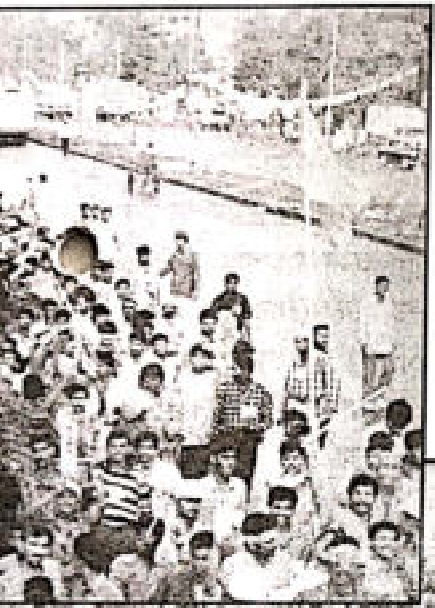

Shri Atulbhai Kothari
General Secretary

Shri Dattaji,
All India Organising Secretary
giving concluding Speech.

power at Golden Jubilee Year

Living का कार्यक्रम शुरु किया। जिसमें North-East के लोग आते थे बम्बई में रहते, बम्बई के लोग जाते वहा रहते थे। नारा रहता था - 'गोवा हो या गुवाहाटी अपना देश-अपनी माटी'। देश के अंदर एकता को सब प्रकार से अगर किसीने प्रसारित किया है, पुरी शक्ति के साथ तो विद्यार्थी परिषद ने। अनुशासन की दृष्टी से विद्यार्थी परिषद आदर्श है जिसको लोग कहते है की भारत में सबसे बड़ी कमी है कहीं दिखाई नहीं देता। विद्यार्थी परिषद के अधिवेशन में जाईये मोर्चे में जाइए। ध्यान में तो सारी बातें आती है शायद राजीव गांधीजी के समय में नागपुर में एक बहुत बड़ा NSUI का अधिवेशन हुआ सबको दिखाने के लिए की हमारे साथ भी बहुत बड़ी शक्ति है, विद्यार्थी है। सबको बुलाया गया, सबको जैसे तिकिट फ्री हो गया। एक छोटा तिरंगा लगाया जिसपर उनकी संस्था का नाम लिखा हो तो उतने ही से आने के लिए छुट मिल गयी। ऐसे लोग जब एकत्रित आते हो जिनपर कोई पूर्वसंस्कार न हो, जिन्होंने जीवन में कभी अनुशासन का अभ्यास न किया हो। नागपुर में एक बड़ा जुलूस निकाला गया तब रास्ते के जो छोटे दुकानदार थे उन्हें लूट लिया गया। बगल में जो महिलाए, बच्चे खड़े थे उन्हें चोटे आयी, कई के साथ बड़ा उल्टा व्यवहार हुआ। सब आश्चर्यचकित हो गये की ये कैसे विद्यार्थी है? ऐसे तो गुंडे लोग भी व्यवहार नहीं करते होंगे। और इसलिए नागपूर के लोगों ने अभ्यास किया और निर्णय किया की दूसरे दिन अगर यह विद्यार्थी किसी होटल में या दुकान में जाकर जबरदस्ती चीजें उठाने चाहें तो उन्हें अच्छा पाठ पढ़ाना चाहिए। दूसरे दिन जब वे विद्यार्थी निकले तो हर गली में उनके शिक्षा की अच्छी व्यवस्था थी। सबकी इतनी पिटाई हुई के सबके सब भागकर स्टेशन पर गये। कोई नागपुर में रुका नहीं। कहने लगे की नागपुर का स्थान था तो इसमें जरुर संघ के लोगों का हाथ रहा होगा। संघ के लोगों का हाथ होने की आवश्यकता नहीं, नागपुर के लोगों को जो अनुशासन का अभ्यास है उसका उपयोग करने का अवसर मिला। बम्बई में आपने 70,000 का मोर्चा निकाला और कई जुलूस, शोभायात्राएं निकाली तब कोई ऐसी घटना नहीं घटी। लोग

युवक वो होता है जिसके अंदर एक ओर काम करने का साहस हो, हिम्मत हो, वह भयभीत न हो, समस्याओं से घबराये नहीं और उसके साथ ही उत्तरदायित्व भी निभाये। Maturity उतनी हो की कमसे कम अपनी responsibility समझे।

□□□

बड़े आश्वस्त होकर उन्हें देखते रहे। अपने अंदर का यह अनुशासन, देशप्रेम जो स्वदेशी के प्रेम के रुप में स्वभाषा, स्ववेष के रुप में सब जगह परिचित है। विद्यार्थी परिषद के इन सब गुणों को सब जानते है। मै उन्हें दोहराना नहीं चाहता। भारत का भविष्य युवकों के हाथ में है। युवक वो होता है जिसके अंदर एक ओर काम करने का साहस हो, हिम्मत हो, वह भयभीत न हो, समस्याओं से घबराये नहीं और उसके साथ ही उत्तरदायित्व भी निभाये। Maturity उतनी हो की कमसे कम अपनी responsibility समझे। आज तो देश में ऐसी स्थिति है की जिसपर उत्तरदायित्व है उसमें कुछ करने का साहस नहीं और जिसमें साहस है उसमें उत्तरदायित्व की भावना नहीं। ये देश का चित्र बदलेगा इस ध्येय को लेकर जो देश के अंदर विद्यार्थी परिषद और अनेक संस्थायें काम कर रही है उसके बारे में अनेक बार लोगों के मन में शंका उत्पन्न होती है। आपने अब्दुल कलामजी को यहां बुलाया था यह भावना लोगों को मन में जगाने के लिए की अब हमारे देश के सामने कोई समस्या, चुनौती आ खड़ी हो जाती है तब हम उसे पार करने की शक्ति रखते है। आप जानते है देश को कहा गया की आपको neuclear explosion की कोई सुविधा नहीं मिलेगी तब हमने हमारे बलबूतें पर neuclear explosion किया। हम आपको कोई कम्प्यूटर सुविधा नही देंगे, पूना के डॉ. भाटकर ने यह परम कम्प्यूटर बनाया। आव्हान, challenge मिलने पर यह सारे काम हमारे वैज्ञानिकों ने करके दिखाए। इसलिए आपने यह कार्यक्रम के लिए अब्दुल कलाम सहाब को बुलाया था कि एक प्रकार के आदर्श है की देश का कैसा चित्र बदला जा सकता है। देश के सामने समस्यायें है लेकिन उनसे घबराके तो काम नहीं चल सकता। उन समस्याओं को हमें हल करना पड़ेगा, अपने आप अपने ही पुरूषार्थ से। कोई अमेरिका या रशिया हमारी समस्या हल नहीं करेगा। हम समस्याये हल कर सकते है यह विश्वास मन में जगना चाहिए। यही सबसे बड़ी बात है। जिन युवकों में यह विश्वास है वह कोई भी काम हल कर सकते है। और यह विश्वास कैसे जगता है, हमारे प्राचीन इतिहास पर जब हम नजर डालते है तो हम कैसे लोगों की संतान है। हम तो अमृत के पुत्रों की संतान है। विश्व मे अमृत लेकर आये

(पृष्ठ क्र. 18 पर)

With Best compliments From

G.S.Tahiliani

Chairman

Pancharatna Traders Pvt. Ltd.

Tel. : 412 65 72 / 411 15 83

(पृष्ठ क्र. 16 से)

है, मरने के लिए नहीं आये है। अमर्त्य सेन को भी इस साल नोबेल प्राइज मिला है। ठिक ही शब्द है। मृत्यु के लिए हम नहीं आए है। इस देश ने कैसे उदाहरण विश्व के सामने प्रस्तुत किए है। कोई दूसरा देश ऐसे उदाहरण प्रस्तुत नहीं कर सकता। दधिची का उदाहरण की जिसने समाज के उपयोग के लिए अपनी हड्डिया भी वज्र बनाने के लिए दी। शांतचित्त से बैठ गया। गाय आकर उसका माँस चांट गयी। अस्थिपंजर रह गया जिसकी इंद्र को आवश्यकता थी वज्र बनाने के लिए। राजा शिरी का उदाहरण है। वह कपोत उसके गोद में आ गिरा। उसके पिछे बाज आया, उसने कहाँ यह मेरा खाद्य है। उसको आपने पकड़ा था ठीक है अब उतनाही मांस अपने शरीर से निकाल कर दीजिए। सामने तराजू लटका दि गयी। वह तो ऐसा कपोत था जिसका वजन बढ़ता गया, भार बढ़ता गया। संपूर्ण शरीर राजा ने अर्पण किया। अगर किसी की रक्षा का प्रश्न है तो कौनसी सीमा तक भारत जा सकता है। ऐसे उदाहरण कहीं नहीं मिलंगे। मातायें खड़ी है अपने आपको अग्नि में समर्पित करने के लिए राजस्थान में, चितौडगढ में ऐसे कई उदाहरण है। दुनियां में कोई दूसरा ऐसे उदाहरण नहीं दे सकता। जीवन के साथ ऐसा खिलवाड़ कोई नहीं कर सकता। पुरानी बात नहीं है, इसलिए मैंने नया भी उदाहरण दिया। शिवाजी महाराज ने क्या उदाहरण प्रस्तुत किया। देश का ऐसा चित्र था की हमारे गुरू रामदासजी ने कहा की यहां कही शुध्द जल संध्यावंदन के लिए नहीं मिलता। सब प्रकार से धर्म समाप्त हो रहा है। और यह कोई पुरानी घटना नहीं है सिर्फ 300 साल पुरानी घटना है। शिवाजी महाराज ने मुघलों के छाती पर ऐसा साम्राज्य खड़ा किया की देश का चित्र बदल गया। गुरू गोविंदसिंहजी ने जो खालसा पंथ की स्थापना की उसके भी अगले वर्ष 300 साल पुरे हो रहे है। इसी देश से कई अनुपम बलिदान किए। कश्मिर के पंडीत गुरू तेज बहादुर के पास अपनी समस्या लेकर आते है। गुरू तेज बहादूर चिंता में लीन हो जाते है। 10 वर्षीय गुरू गोविंद सिंह वहा से घुमते आते है और पुछते है क्या समस्या है पिताजी ? वे कहते है कश्मिर के पंडीतों की समस्या है। इसके लिए किसी बड़े आदमी का बलिदान आवश्यक है। बड़े सरल शब्दों में उनका उत्तर था की आपसे बड़ा कौन व्यक्ति हो सकता है। और इसलिए मन का निश्चय हुआ। कश्मिर के पंडीतों से उनका कोई रिश्ता न था लेकीन भाई मतिदास, भाई सतिदास, भाई दयाल जो उनके मंत्री भी थे वह सब दिल्ली पहुंचे और बडी क्रूरता के साथ उनका बलिदान हुआ। उसी कारण इस खालसा पंथ की स्थापना हुई। दो छोटे बच्चे दिवार में गाडे जा रहे है। एक 6 साल का और एक 8 साल का। दिवार पहले छोटे बच्चे के सिर तक आती है। बड़े के चेहरे पर थोडी नमी आ जाती है। वह पूछता है क्या बात है भाईसाब, आपकी आंखो में आसू क्यां ? तो बड़े ने कहा की संसार में तू मेरे बाद आया पर देश के लिए बलिदान करने का अवसर तुझे पहले मिल रहा है। विश्व में इस प्रकार के कहा उदाहरण होंगे। इन सबसे हमारा संपर्क जुड़ा है। हमारे अंदर एक कितना विशेष तत्व है। मै हमेशा मजाक में कहा करता हूँ कि हमारे डी एन ए में कैसे अलग संस्कार है। भारत के व्यक्ति इसलिए ऐसे काम कर सकते है। शायद हनुमानजी का भी असर है। विश्व का सबसे प्राचीन देश, सबसे सुसंस्कृत देश जिसने दुनिया के सामने आदर्श प्रस्तुत किए। जिसके बारे में दुनिया के देश कहते है की यह मार्गदर्शन करेगा 21 वी सदी में। अपने देश में इतनी प्रगति होने पर भी मन में एकप्रकार की निराशा है कि, मन में आता है कि क्या देंगे हम दुनिया को ? आपने नाम पढ़ा होगा गिनरीश न्युएस का सिनेट के प्रमुख थे अभी थोड़े दिन पहले गिरफ्तार किया था। वे कहते है अमेरिका के बारे में क्या हो रहा है अमेरिका में ? 11-12 वर्ष की लडकियों के बच्चे होते है। 14 साल के बच्चे आते है बंदुक लेकर कॉलेज में और मार देते है अपने साथीयों को। 16 वर्ष के बच्चों को एड्स हो रहा है। ये कैसी संस्कृति है। सायन्स में बहुत प्रगति है लेकिन मानवता की दृष्टी से क्या है ? इसके विपरीत विश्व के माने हुए इतिहासकार कहते है India shall make great progress in 21st century in every field. It shall be able to harmonise science and religion. It is the only country which could do it and will do it. यह हमसे दुनिया की अपेक्षा है। हम में इस प्रकार की शक्ति, क्षमता छुपी हुई है। इस क्षमता को जागृत करके विद्यार्थी परिषद को अपनी प्राचीन संस्कृति और महापुरूषों से अपना नाता जोड़कर तार के अंदर जब तक विद्युत का प्रवाह नहीं जाता तार में कोई शक्ति नहीं मिलती। जब तक हम प्राचीन संस्कृति से नाता नहीं जोडते तब तक अंदर की उदय नहीं होगा। अगर संस्कार उदय हो गये तो विश्व का कौनसा काम है जो हम नहीं कर सकते। आत्मविश्वास के साथ विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता काम में जुट जाये यही मै ईश्वर से प्रार्थना करता हूं। ऐसी शक्ति, ऐसा विश्वास उनके मन में हो। 21 वी शताब्दी में भारत को सबका नेतृत्व करने का अवसर मिले।

उदयपुर के श्री अनिल मेहता को प्रा. केलकर युवा पुरस्कार

प्रा. यशवंतरावजी केलकर एक आदर्श सामाजिक कार्यकर्ता का जीता जागता उदाहरण थे। विभिन्न क्षेत्रो में काम करनेवालें अनेक व्यक्तियों के लिये वे प्रकाशस्तंभ जैसा थे। पारिवारिक जिम्मेदारियाँ और सामाजिक कार्य को समानरुप से न्याय देने का वे स्वयं उदाहरण थे। यशवंतरावजी के अथक परिश्रम, प्रखर ध्येयनिष्ठा, संपूर्ण समर्पण और सुनियोजन के कारण ही आज विद्यार्थी परिषद एक अखिल भारतीय सशक्त छात्र संगठन के रुप में सुस्थापित हुआ है। अपनी छात्रावस्था से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सक्रिय कार्यकर्ता रहे, प्रा. केलकरजी मुंबई के नॅशनल कॉलेज में अंग्रेजी विभाग के प्रमुख थे। असंख्य विद्यार्थियों के लिए वे सच्चे मित्र, अनुपम तत्ववेत्ता और मार्गदर्शक थे। विभिन्न प्रतिभाओं एवं क्षमताओं के युवक युवतियों के मन में देश और समाज स्थिति के बारे में सजगता उत्पन्न करते हुए उनको राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के कार्य में लगाने हेतु यशवंतराव अथक परिश्रम करते रहे। प्रा. यशवंतरावजी ने संगठन शास्त्र को मानवीय पहलू प्रदान किया। वे संपर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिये सार्वकालिक, आदर्श मित्र रहे। स्वाधीनता के पश्चात चल रहे भारतीय छात्र आंदोलन को प्रखर राष्टभक्ति की एक नयी दिशा देना यह यशवंतरावजी का हमारे राष्ट्रीय जीवन में सबसे महत्वपूर्ण योगदान है।

श्री नाना पाटेकर केलकर युवा पुरस्कार श्री अनिल मेहता को प्रदान करते हुए

प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार का प्रारंभ 1991 में इस श्रेष्ट प्रेरणादायी व्यक्ति की पावन स्मृति में हुआ। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद और विद्यार्थी निधि न्यास का यह संयुक्त उपक्रम है। विभिन्न विषयों पर काम करनेवाले सामाजिक कार्यकर्ताओं का कार्य समाज के सम्मुख लाना और ऐसे कार्यकर्ताओं के प्रति समूचे युवा वर्ग की कृतज्ञता प्रगट करना यह इस युवा पुरस्कार की कल्पना है। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष होनेवाले अ.भा.वि.प. के राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसरपर दिया जाता है। इस पुरस्कार में नकद राशि रु. 10,000/-, मानपत्र एवं स्मृतिचिन्ह समाविष्ट हैं।

इस साल (1998) युवा पुरस्कार के लिये 'शहरी पर्यावरण का संरक्षण एवं संवर्धन' यह विषय था। उदयपुर के श्री अनिल मेहता को यह पंरस्कार मुंबई में हुए स्वर्ण जयंती वर्ष राष्ट्रीय अधिवेशन

में प्रदान किया गया ।

श्री अनिल मेहता उदयपुर में एक अभियांत्रिकी महाविद्यालय में प्राध्यापक है तथा वहाँ 'झील' संरक्षण समिति के सहसचिव भी है । श्री मेहताने झीलों की रचना, पध्दति, महत्व, पर्यावरण पर उनका प्रभाव आदि विषयों में सखोल अध्ययन व संशोधन किया है । श्री मेहता ने उदयपुर के महत्त्वपूर्ण 'पिचोला' झील' सहित अनेक झीलों को पर्यावरण प्रदूषण से बचाने के प्रयास किये है ।

विगत वर्षों में युवा पुरस्कार प्राप्त व्यक्ति और विषय का विवरण इस प्रकार है :

वर्ष	विषय	प्राप्तकर्ता
1997	पत्रकारिता द्वारा सामाजिक जागरण	श्री समीप कुमार दास, सिलचर - असम
1996	झुग्गी-झोपडी निवासियों का विकास	श्री विश्वनाथ बेंद्रे, सोलापूर - महाराष्ट्र
1995	औषधी वनस्पति संरक्षण एवम् संवर्धन	श्री रामदास पालेकर, कर्जत -महाराष्ट्र
1994	परंपरागत तकनिकी संरक्षण एवम् विकास	श्री सुधाराम बिरजिया
		श्री रामवृक्ष लोहरा, बिशनपुर-गुमला-बिहार
1993	वनवासियों के विकास हेतु कार्य	श्रीमती उबाति रियांग, वनवासी कल्याण आश्रम, असम
1992	ग्रामीण विकास में अनुरुप तकनिक का प्रयोग	श्री संतोष गोंधळेकर - गंगोत्री, पुणे - महाराष्ट्र
1991	महिला सामाजिक कार्यकर्ता	श्रीमती इंदुमती राव - सीबीआर नेटवर्क, बेंगलूर - कर्नाटक

(पृष्ठ क्र. 6 से)

शिक्षा क्षेत्र के अधिकारी उनके निराकरण में अपने आप को असमर्थ पाते हैं।

देश की आधी जनसंख्या निरक्षर है। 6 से 11 वर्ष की उम्र के 66% बच्चों का किसी भी विद्यालय में नामांकन नहीं हुआ है और जिनका नामांकन भी होता है उनमें से भी 37% चौथी कक्षा तक पहुँचते-पहुँचते विद्यालय छोड देते हैं । शिक्षा की पूरी व्यवस्था उद्देश्यहीन एवं दिशा विहीन है । यद्यपि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हमारे पास विश्व में सबसे बड़ा ढाँचा है (240 विश्वविद्यालय, 9000 महाविद्यालय, 60 लाख विद्यार्थी) परंतु देश की जनसंख्या की तुलना में यह विशालता भी नगण्य है क्योंकि उच्च शिक्षा में नामांकन जनसंख्या का 6% ही है जो कि विश्व में निम्नतर है।

उच्च शिक्षण संस्थाओं की स्थिति इतनी गिरी हुई है कि इस बारे में न कहना ही बेहतर है । विश्वविद्यालयों के प्रशासन में बड़ी अराजकता है। अधिकतर विश्वविद्यालय 180 दिन के अध्यापन एवं निर्धारित कार्यक्रमानुसार परीक्षाएँ आयोजित कराने में विफल रहे हैं। छात्र, शिक्षक एवं अशैक्षणिक कर्मचारियों द्वारा विभिन्न मुद्दे उठाने पर भी विश्वविद्यालय के अधिकारियों का रवैया निराशापूर्ण रहता है। गत वर्ष दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षकों के आन्दोलन के दौरान परीक्षाएँ रुक जाने पर अ.भा.वि.प. को न्यायालय तक की शरण लेनी पड़ी। जयपुर में और वाराणसी में परीक्षा में परिणामों की घोषणा में विलंब से क्षुब्ध एक छात्र द्वारा आत्महत्या की घटना से विश्वविद्यालय अधिकारियों की आँखे खुलनी चाहिए।

भले ही विश्वविद्यालयीन शिक्षा से अध्यापन, शोध एवं शिक्षा विस्तार की अपेक्षा की जाती है परन्तु अधिकतर विश्वविद्यालय इनमें से किसी की भी क्रियान्विती में सफल नहीं रहे है। विश्वविद्यालयों का कार्य परीक्षा आयोजित करने एवं परिणाम घोषित करने तक सीमित है पर वे इसे भी सुचारु रुप से नहीं कर पा रहे। ज्यादातर विश्वविद्यालय समय पर सत्र प्रारम्भ करने एवं कार्यक्रमानुसार परीक्षा शुरु कराने में भी विफल रहते हैं। प्रश्नपत्रों का ठीक होना,

उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन में भ्रष्टाचार, अंकतालिकाएँ बनाने में हेराफेरी आदि विश्वविद्यालयों में आम बात बन गई हैं।

विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता सिध्दान्त मात्र रह गई है। कुलपति की नियुक्ति से ही राजनैतिक हस्तक्षेप प्रारंभ हो जाता है। विश्वविद्यालयों में कुलपति की नियुक्ति जाति, राजनैतिक प्रतिबध्दता, व्यक्ति विशेष के प्रति आस्था एवं सत्तापक्ष के हितसाधन के आधार पर की जाती है।

अधिकतर विश्वविद्यालयों में सीनेट एवं सिण्डीकेट नामजद संस्थाएँ हैं एवं ऐसी नामजदगी जाति, एवं राजनैतिक प्रतिबध्दता के आधार पर होती हैं। कई विश्वविद्यालयों में वर्षों तक सीनेट एवं सिण्डिकेट की बैठक ही नहीं होती एवं विश्वविद्यालय से संबंधित सभी निर्णय अकेले कुलपति ही कर लेते हैं। अ.भा.वि.प. का मत है कि विश्वविद्यालय का संचालन योग्य शिक्षाविदों द्वारा ही होना चाहिए। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद इस राष्ट्रीय अधिवेशन में केंद्र सरकार से मांग करती है कि वह कुलपतियों के चयन हेतु विवेकपूर्ण एवं समरुप प्रक्रिया बनाये ताकि यह राजनैतिक पक्षपात का साधन न बने ।

देश में परिसरों का माहौल रैगिंग, नये छात्रों के साथ दुर्व्यवहार, गुण्डागर्दी एवं नशीले पदार्थों के सेवन की निरंतर घटनाओं से बिगड़ रहा है। ऐसे विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय जहाँ छात्रसंघ चुनाव होते हैं वहाँ जाति के आधार पर विचार सर्वोपरि हो गया है। ऐसा माहौल स्वस्थ परिसर संस्कृति एवं परिपक्व छात्र समुदाय के लिए उचित नहीं है। यह राष्ट्रीय अधिवेशन छात्र समुदाय को आह्वान करता है कि वे परिसरों में ऐसा माहौल उत्पन्न करें जिसमें विद्यार्थी गंभीरता से शैक्षणिक गतिविधियों में सहभागी बनें ।

व्यापक भ्रष्टाचार ने शिक्षा क्षेत्र को जकड़ लिया है। भ्रष्टाचार ने प्रवेश में अनियमितता, परीक्षा में नकल, फर्जी डिग्रियाँ एवं इसी प्रकार की अन्य गतिविधियों का रुप ले लिया है। परिणाम स्वरुप विश्वविद्यालय एवं परीक्षा व्यवस्था की साख नष्ट हो गई है।

शिक्षा का व्यवसायीकरण शिक्षा क्षेत्र को एक और चुनौती है। उच्च शिक्षा की वित्तीय व्यवस्था से सरकार द्वारा हाथ खींच लेने के कारण सिध्दान्तहीन तत्त्व धीरे-धीरे इस क्षेत्र पर कब्जा करते जा रहे हैं एवं विद्यार्थियों का शोषण करने को उद्धत हैं। स्ववित्त व्यवस्था के नाम पर कई शिक्षण संस्थाएँ उत्पन्न हुई हैं जो सिर्फ शिक्षा की दुकानें हैं। शिक्षण संस्थाओं की बड़ी संख्या जो कम्प्यूटर, प्रबंध एवं अन्य क्षेत्र जो विश्वविद्यालय व्यवस्था से बाहर हैं, वे सब लाभ कमाने के उद्देश्य से ही बनी हैं।

पिछले 50 वर्षों में उच्च शिक्षा में 10 गुना वृध्दि हुई है। सरकार महसूस करती है कि वह अकेले इसकी वित्तीय व्यवस्था करने की स्थिति में नहीं है। इसके अतिरिक्त पिछले वर्षों में यह वृध्दि अनियोजित एवं बिना उचित दिशा में हुई है। अभी एक नया विचार उत्पन्न हुआ है कि मानविकी एवं विशुध्द विज्ञान अनुपयोगी विषय हैं। जब कि अन्य विषय उपयोगी हैं। सरकार द्वारा ऐसे तथाकथित अनुपयोगी विषयों को दुर्लक्ष्य करने एवं उन्हें अपने भरोसे ही छोड़ देने की प्रवृत्ति पर विद्यार्थी परिषद चिन्ता व्यक्त करती है । यह राष्ट्रीय अधिवेशन चेतावनी देता है कि सामाजिक विज्ञान, भाषा एवं विशुध्द विज्ञान के विषयों के अध्ययन की उपेक्षा करना आगे चल कर सामाजिक हित के लिए घातक होगा ।

राजनीतिजन्य अपराध एवं अनियमितताओं को शिक्षा क्षेत्र से समाप्त करने एवं शिक्षा क्षेत्र को उचित दिशा, उद्देश्य एवं स्वस्थ दर्शन प्राप्त करने हेतु यह आवश्यक है कि पूरी व्यवस्था राजनैतिक हितों के शिकंजे से मुक्त हो। इस परिप्रेक्ष्य में अ.भा.वि.प. अपनी मांग को दुहराती है कि एक ऐसी स्वायत्त संस्था की स्थापना हो जो पूरे शिक्षा क्षेत्र का पर्यवेक्षण एवं संचालन करे। अ.भा.वि.प. माँग करती है कि सरकार शिक्षा प्रदान करने की अपनी प्राथमिक जिम्मेदारी एवं सकल राष्ट्रीय उत्पाद का 10% शिक्षा के लिए आवंटित करने के अपने दायित्व से पीछे न हटे। अ.भा.वि.प. यह भी माँग करती है कि शिक्षा के ढाँचे एवं अध्ययन सामग्री की पुर्नरचना हेतु सरकार शिक्षा के ढांचे की कार्य विधि की समीक्षा हेतु समयबध्द कार्य योजना तैयार करे।

●●●

दि कल्याण जनता सहकारी बँक लिमिटेड

आमच्या बँकेची वैशिष्टये

- २५ वर्षाची यशस्वी वाटचाल.
- सभासदांसाठी विविध योजना.
- धर्मादायव्दारा अनेक संस्थांना भरघोस आर्थिक मदत.
- संगणकीकृत शाखा.
- ग्राहकसेवा वेळेत वाढ.
- रू. १ लाखापर्यंतच्या ठेवींना विमासंरक्षण.
- डायरेक्ट क्लिअरींग.
- कल्याणमध्ये कर्ज देण्यात सिंहाचा वाटा.

कल्याण व परिसरात १ शाखा

- प्रा. डॉ. ग. द. काणे
  अध्यक्ष
- सौ. प्र. वि. तिवलकर
  उपाध्यक्ष
- संचालक मंडळ
- श्री. सु. शा. हम्पीहळ्ळीकर
  सरव्यवस्थापक - वरिष्ठ

"निहारिका"
रेल्वे स्टेशन समोर,
कल्याण (प).

दूरध्वनी : ३१ ६६ ४१
३१ ५९ ९५
फॅक्स : ३१ ०१ ८३

विद्यार्थी परिषद का मुंबई में हुआ यह अधिवेशन स्वर्ण जयंती वर्ष अधिवेशन था।
विद्यार्थी परिषद शायद एकमात्र ऐसा विद्यार्थी संगठन है जिसका हर वर्ष राष्ट्रीय अधिवेशन होता है।
विद्यार्थी परिषद को स्थापना से अभी तक के हुए अधिवेशन की सूची यहाँ पर दे रहे है :

वर्ष	स्थान	अतिथि	राष्ट्रीय अध्यक्ष	महामंत्री
1949	दिल्ली		श्री. ओमप्रकाश बहल	श्री. केशवदेव शर्मा
1954	दिल्ली		श्री सुरेंद्र मित्तल	प्रा वेदप्रकाश नंदा
1956	सागर (म.प्र.)		प्रा वेदप्रकाश नंदा	श्री. नरेश जौहरी
1957	जलंधर (पंजाब)		प्रा वेदप्रकाश नंदा	श्री. नकुल भार्गव
1958	आगरा (उ.प्र.)		प्रा वेदप्रकाश नंदा	
1959	मुम्बई	पूज्य शंकराचार्य	प्रा वेदप्रकाश नंदा	श्री माधव परलकर
1960	जबलपुर	पं. कुंजीलाल दुबे	प्रा हरिवंशलाल ओबेराय	श्री माधव परलकर
1961	प्रयाग	नगर निगम अध्यक्ष, प्रयाग	प्रा. हरिवंशलाल ओबेराय	श्री विजय मंडलेकर
1962	दिल्ली	डॉ. हरेकृष्ण मेहता	प्रा. व्ही. नागराजन	श्री विजय मंडलेकर
1963	ग्वालियर	कुलपति जीवाजी वि. वि.	डॉ. एम. व्ही. कृष्णराव	श्री रामकृष्ण मिश्र
1964	नागपुर	स्वामी चिन्मयानन्द	प्रा. दत्ताजी डिडोलकर	श्री रामकृष्ण मिश्र
1965	मुम्बई	श्री एस्. पी. पी. थोरात श्री जैतन बिन इब्राहिम	प्रा. गिरिराज किशोर	श्री रामकृष्ण मिश्र
1966	कानपुर	जन. के. एम. करिअप्पा	प्रा. गिरिराज किशोर	श्री भोलानाथ विज
1967	इंदौर	राजमाता विजयाराजे सिंधिया	प्रा. यशवंतराव केलकर	श्री. विकास भट्टाचार्य
1968	हैदराबाद	न्या. कोका सुब्बाराव	प्रा. नारायणभाई भंडारी	श्री संगमेश्वर रेड्डी
1969	कलकत्ता	डॉ आर. सी. मजुमदार श्री मोहन रानडे	श्री पद्मनाभ आचार्य	श्री व्ही. रविकुमार
1970	त्रिवेंद्रम	श्री जाज जेकब	प्रा. दत्ताजी डिडोलकर	श्री राजकुमार भाटिया
1971	दिल्ली	श्री मोहम्मद करीम छागला	प्रा. दत्ताजी डिडोलकर	श्री राजकुमार भाटिया
1972	पटना	श्री रामधारीसिंह 'दिनकर'	प्रा. दत्ताजी डिडोलकर	श्री राजकुमार भाटिया
1973	अहमदाबाद	आचार्य जे. बी. कृपलानी	प्रा. नटवरलाल राजगुरु	श्री राजकुमार भाटिया
1974	मुम्बई	प्रा. नानी पालखीवाला	प्रा. बाल आपटे	श्री विराट वेंकटेश श्री पिराटला व्यकटेश्वरलु
1977	वाराणसी	श्री डी. आर. मनकेकर श्री. सिध्दराज ढढ्ढा	प्रा. बाल आपटे	श्री महेश शर्मा

वर्ष	स्थान	अतिथि	राष्ट्रीय अध्यक्ष	महामंत्री
1978	बेंगलोर	डॉ वी. के. आर. राव	प्रा. बाल आपटे	श्री महेश शर्मा
1979	जयपुर	न्या वी. एम. तारकुंडे	प्रा. पी. व्ही. कृष्णभट्ट	श्री महेश शर्मा
1980	रायपुर	श्री जैनेन्द्र कुमार जैन	प्रा. पी. व्ही. कृष्णभट्ट	श्री महेश शर्मा
1981	हुबली	श्री चो रामास्वामी	प्रा. पी. व्ही. कृष्णभट्ट	श्री महेश शर्मा
1982	नागपुर	प्रा वी एम दांडेकर श्री म द देवरस	प्रा. ओमप्रकाश कोहली	श्री एच दत्तात्रेय
1983	राजकोट	श्री. जे. डी. सेठी	प्रा. ओमप्रकाश कोहली	श्री सुशील कुमार मोदी
1984	पटना	वायुसेनाध्यक्ष अर्जुनसिंह ले. ज. एम. के. सिन्हा	प्रा ओमप्रकाश कोहली	श्री सुशील कुमार मोदी
1985	दिल्ली	स्वामी रंगनाथानंद श्री अटलबिहारी वाजपेयी	प्रा. डॉ. अशोक मोडक	श्री सुशील कुमार मोदी
1986	विशाखापट्टनम	डॉ. रामकृष्णराव श्री. हो. वे. शेषाद्री	प्रा. डॉ अशोक मोडक	श्री हरेंद्रकुमार
1987	आगरा	श्री अरुण शौरी	प्रा. डॉ. अशोक मोडक	श्री हरेंद्रकुमार
1988	मुम्बई	श्री ए. पी. व्यंकटेश्वरन	प्रा. डॉ. अशोक मोडक	श्री हरेंद्रकुमार
1989	पटना	श्री. भाऊराव देवरस	प्रा. रामस्नेही गुप्त	श्री हरेंद्रकुमार
1990	हैदराबाद	श्री अशोक सिंहल	प्रा. राजकुमार भाटिया	श्री चंद्रकांत पाटील
1991	जयपुर	श्री जगमोहन	प्रा. राजकुमार भाटिया	श्री चंद्रकांत पाटील
1992	कानपुर	श्री दलाई लामा	प्रा. राजकुमार भाटिया	श्री चंद्रकांत पाटील
1993	भुवनेश्वर	श्री नानाजी देशमुख	प्रा. राजकुमार भाटिया	श्री विनोद तावडे
1994	इंदौर	श्री. धर्मपाल	प्रा. राजकुमार भाटिया	श्री व्ही. मुरलीधरन
1995	नागपुर	डॉ. ओमप्रकाश बहल	डॉ. डी. मनोहरराव	श्री व्ही. मुरलीधरन
1996	बैंगलूर	डॉ. जी. पदमनाभन	डॉ. डी. मनोहरराव	श्री महेंद्रकुमार
1997	चेन्नै	श्री जे. एन. दीक्षित	श्री. दिनेशानंद गोस्वामी	श्री महेंद्रकुमार
1998	मुंबई	श्री जॉर्ज फर्नांडिस		

With Best Compliments From

A well-wisher

विद्यार्थी परिषद द्वारा छात्रशक्ति यात्रा का यशस्वी आयोजन

विद्यार्थी परिषद के स्वर्ण जयंती वर्ष (1998-99) के उपलक्ष्य में देशभर के छात्रों एवं युवाओं में राष्ट्रीय एकात्मता, शैक्षिक पुनर्रचना एवं सामाजिक जागरण का संदेश प्रसारित करने के लिये देश के चार प्रमुख स्थानों से चार यात्राएँ निकालने का निर्णय विद्यार्थी परिषद ने लिया था।

उपरोक्त निर्णय के अनुसार पहली यात्रा दि. 8 नवबंर को नालंदा (बिहार), जो स्वर्णकालीन भारत का प्राचीन विश्वविद्यालय केंद्र है, से शुरु हुई। इस यात्रा का शुभारंभ प्रसिध्द पत्रकार एवं चिंतक श्री अरुण शौरी ने किया, विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रा. दिनेशानंद गोस्वामी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। बिहार, उत्तर प्रदेश, महाकोशल, मध्यभारत इन प्रांतों से गुजरती हुई यह यात्रा दि. 20 दिसंबर को ठाणे (महाराष्ट्र) में पहुंची। दूसरी यात्रा दि. 9 नवंबर को मोईरांग (मणिपुर) से शुरु हुई जहाँ नेताजी सुभाष के नेतृत्व में आझाद हिंद फौज ने अपनी 'चलो दिल्ली' यात्रा में प्रथम झंडा फहराया। इस यात्रा का उद्घाटन आई.एन.ए के स्वतंत्रता सेनानी श्री चिंतामणी सिंह ने किया। इस अवसर पर विद्यार्थी परिषद के पूर्व महामंत्री श्री सुशील कुमार मोदी एवं राष्ट्रीय महामंत्री उपस्थित थे। यह यात्रा मणिपुर, मेघालय, असम, प.बंगाल, उड़िसा, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, विदर्भ ऐसे होकर दि. 20 दिसंबर को पुणे में पहुंची।

चार यात्राओंका स्वागत करते हुए महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री श्री गोपीनाथ मुंडे

तीसरी यात्रा तिरुवनंतपुरम के निकट चम्पज़ती, जो समाजसुधारक श्री नारायण गुरु का जन्मस्थान है, से दि. 10 नवंबर को शुरु हुई। इस यात्रा का उद्घाटन विवेकानंद केंद्र के अध्यक्ष श्री पी.परमेश्वरन ने किया। यह यात्रा केरल,तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, गोवा से होते हुए दि. 20 दिसंबर को पुणे में पहुंची। चौथी यात्रा दि. 17 नवबंर को श्रीनगर से शुरु हुई जिसके उद्घाटन कार्यक्रम में जम्मू-कश्मीर रा. स्व. संघ के प्रांत प्रचारक श्री इंद्रेशकुमार एवं श्रीनगर के पूर्व सांसद श्री काबुली प्रमुख वक्ता थे। यह यात्रा जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, गुजरात इन प्रांतों से गुजरकर दि 20 दिसंबर को ठाणे में पहुंची।

यात्रा वाहन, जो एक रथ था, भारतमाता, माँ सरस्वती व स्वामी विवेकानंद के चित्रों से सुसज्जित था। यात्रा मार्ग में यह रथ महाविद्यालय, विश्वविद्यालय परिसरों में गया और छात्रों को इकठ्ठा करके देश की सद्यस्थिति तथा विद्यार्थी परिषद का दिसंबर में होनेवाला स्वर्ण जयंती वर्ष राष्ट्रीय अधिवेशन और उसमें पारित होनेवाले 'छात्रसंकल्प' से उनको अवगत कराया। स्थान - स्थान पर बड़े उत्साह के साथ यात्रा का स्वागत किया गया तथा शोभायात्रा के साथ आमसंभाएँ भी हुई। इन दिनों में कुल 27000 किलोमीटर से अधिक दूरी तय की गई, 430 स्थानों पर

ABVP seeks a larger global role - Shri Atul Kothari

Shri Atul Kothari, newly elected National General Secretary from Jamnagar district of Gujarat, is an ABVP activist since 1979. A commerce graduate, he has praticipated in various agitational and developmental programmes undertaken by ABVP including rendering help to flood-hit victims. As a student activist, he has held various positions in the organisation and commands a clear perspective on the role of student organisations in the process of national reconstruction. Excerpts of his conversation with our reporter -

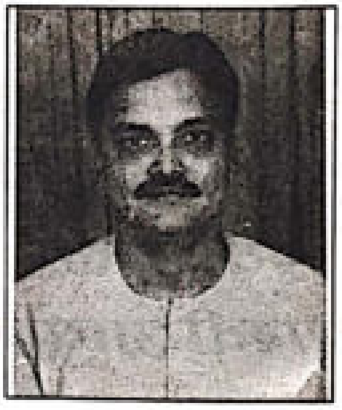

Q. How do you feel after being elevated as national general secretary ?

Ans. Well, we in ABVP do not attach much importance to positions, instead we take it as responsibility.

Q. As the general secretary, what will be your priorities ?

Ans. As you know, we are celebrating the fifty years of our organisation. During these years, the ABVP has established itself as the premier student organisation in India and has contributed immensely to national life. Our aims are high and we have a long way to go. We have to strengthen our organisation, while giving a new direction to students from all over the world.

Q What are you going to do for that purpose ?

Ans. Well, ABVP has taken up the task of uniting students from all over the world. We are going to organise a conference of student and youth of SAARC countries including Tibet and Myanmar in July 1999 in Delhi. Our aim is to drive home the message of *"Vasudhaiva Kutumbakam"*, and that students have a great role to play in enchancing peace in world. We are trying to give a n[illegible] dimension to international relations bringing them up from political level to a social level.

Q. Your critics say that ABVP is obscurantist and back-ward looking. Please comment ?

Ans. We believe that Westernisation is not modernisation. We draw inspiration from the rich heritage and cultural tradition of Bharat. At the same time we are not hostages of the past. Our aim is *Puranee neev, naya nirman.* With this in mind, we have organised many programmes to encourage young scientists and talents.

(पृष्ठ क्र. 23 से)

यात्राएँ गई, शहर तथा महाविद्यालयों में कुल 479 कार्यक्रम हुए, 177 जगह शोभायात्रा का आयोजन किया गया । इन चारों यात्राओं में कुल छात्र तथा नागरिक मिलाकर 1,56,270 इतनी सहभागिता रही ।

दि 25 दिसंबर को सुबह सभी यात्राओं का स्वागत मुलुंड चेक नाके पर मुंबई के महापौर श्री नंदकुमार साटम तथा उपमहापौर श्री गोपाल शेट्टी ने किया । यह चारों यात्राएँ वहाँ से एक साथ अधिवेशन स्थल पर आयी जहाँ पर महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री श्री गोपीनाथ मुंडे ने उनका स्वागत किया । इस अवसर पर लम्बे समय तक पूर्वोत्तर राज्यों से जुड़े रहे अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पद्मनाभ आचार्य ने अपने विचार व्यक्त किये । सभी यात्रा प्रमुखों ने भी इस कार्यक्रम में अपना मनोगत प्रस्तुत किया ।

देश के सभी प्रांतों में देश की एकता,अखंडता एवं सामाजिक समरसता का संदेश देते हुए एवं शैक्षणिक प्रश्नों का अवलोकन करते हुए इन यात्राओं के माध्यम से देश के छात्र एवं युवा जनमानस को राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के कार्य में समर्पण को और अधिक तीव्रता प्रदान करने का एक अद्भुत, अद्वितीय एवम् अविस्मरणीय प्रयास हुआ ।

Flag Hoisting at Yashwantrao Kelkar Nagar

Shri. Mahendra Kumar, Former General Secretary Garlanding Shahid Smarak

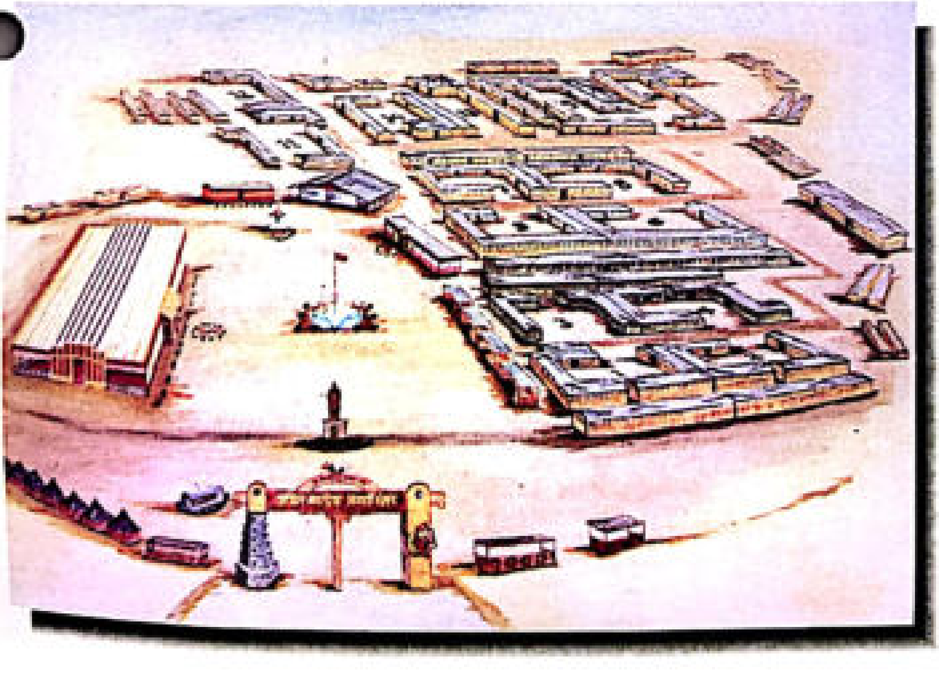

Scale Model of Yashwantrao Kelkar Nagar

Regd. No. RN-31647177 R.P.No. MH/BYW-437/09

*With
Best
Compliments
From*

The

Bombay Burmah
Trading Corporation Ltd.

9, Wallace Street, Fort,
Mumbai - 400 001

Printed & Published by : Shri Shekhar Chandratre, Chhatrashakti, 3, Marble Arch, Senapati Bapat Marg, Mahim, Mumbai - 400 016. Printed at **Akshay Enerprises,** 12, Rustam Compound, Ganpatrao Kadam Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013.